

S.H. R A Z A

101. RUE DE CHARONNE
2. CITÉ DU COUVENT
75011 PARIS

TÉL. 43.70.97.64

पेरिस, ३ मार्च, १९८८

प्रिय अमित, प्रिय रक्षा,

हिन्दी में ही यह पत्र / पेरिस लौट आया हूँ। देश के सात्विक, सौंदर्यय वातावरण के बाद, यहाँ का भौतिक, सांसारिक जीवन असह्य लग रहा है। फिर भी यहाँ रहना अनिवार्य है। मुझे यही सक्षिप्त लगा है और इसी प्रक्रिया में देश से जीवन आदी नाता रहेगा।

आपसे मिलकर, आपको जानकर बड़ा सुख पाया। सहज जेद के लिये हार्दिक धन्यवाद। कुछ मुझसे बालियाँ हुईं, इनके लिये माफ़ी चाहता हूँ। मुझे सच बोलने की बुरी आदत है। पा जो कहता हूँ प्यार से कहता हूँ। जानिन को, यहाँ आपके सुन्दर व्याकी फोटो, दशरी जत चीत, श्री बाथ त्री के उत्कृष्ट चित्र बताये। अहमदाबाद भोपाल के प्रिय दिन, कला वाता, सब कुछ इन्हे मालूम है। इन्हे भी फिर आने की इच्छा तीव्र है। अगले साल - जनवरी-फरवरी में। पा केवल तीन दिन। मनिये तीन दिन से अधिक, "अतिथि" असह्य है।

दिल्ली की आखरी रात - गीती सेन के घर। श्री ललित मानसिंह, I.C.C.R. दिनर पा थे। बहुत सी बातें हुईं। मैंने श्री बाथ त्री के नाथ-छा। के चित्रों के बारे में आपकी योजना पेश की - कि यह प्रदर्शनी एक दिन पेरिस में बतौयी जाये। वे इस बारे में उत्साही लगे। उन्होंने यह भी कहा कि अगर पेरिस में कोई कला संस्था या गैलरी इसमें दिलचस्पी ले, तो उन्हें सूचना दें। वे सहाय्य होंगे। क्या यह संभव है। आप अपना एय दे। मैं भी यहाँ पूरा ताकू करूँगा। अच्छा होगा कि यह प्रदर्शनी पेरिस, लन्दन और जर्मनी में हो सके।

आज पेरिस में वफ़ा गिर रही है। देश की स्मृतियाँ साथ हैं। पाया जेद, संवेदनशील आत्मीय सम्बन्ध, उत्तेजित का है। काम जल्दी ही शुरू होगा।

आपकी भौती, जेद सय "रक्षा" - साथ है, यही आशा है। मेरे साथ "जानिन" भी कह रही है: "आव जो"।

आपका - (सहज)